Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

मिथकीय परिवेश में स्त्री का आधुनिक संदर्भ:'माधवी'के बहाने से

डॉ. सुधांशु शर्मा

कुम्हारिया, कांके, रांची, झारखंड

कथाकार के साथ ही नाटककार के रूप में भी भीष्म साहनी अपने समकालीन लेखकों में प्रसिद्ध रहे। नाट्य लेखन व रंगमंच से इनका जुड़ाव इप्टा से जुड़ने के बाद अधिक होने लगा तब तक वह कथाकार के रूप में प्रसिद्ध हो चुके थे। इसके बाद उन्होंने अपनी कई कहानियों का नाट्य रूपान्तरण भी किया। विभिन्न निर्देशकों द्वारा इनकी रचनाओं का सफल मंचन किया गया है। इनकी रचनाओं में पात्र चयन,आख्यान, विषय-वस्तु, शिल्प संरचना या रंग-सूत्र विद्यमान हैं। नाटक का कथानक मानवीय जीवन से ही उठाया जाता है इसलिए पूरे मानवीय जीवन में इसके अनेक आयाम होते हैं। जिन्हें नाटकीय रूप दिया जाता है। भीष्म साहनी की यह कृति हमें मिथकीय यात्रा में ले जाती है, जहां हम चारों और वर्तमान जैसी ही विसंगतियों से रूबरू होते हैं। नाटक में मिथक प्रयोग होते आए हैं। हिन्दी नाटकों में महाभारत के मिथकीय आख्यानों को समकालीन जीवन की परिस्थितियों से जोड़कर कई नाटक रचे गए हैं जिनमें धर्मवीर भारती कृत 'अंधा युग', शंकर शेष कृत 'एक और द्रोणाचार्य' व 'कोमल गांधार' प्रमुख हैं। 'माधवी' महाभारत के कथा प्रसंग से उठाया गया कथानक है। इस नाटक में स्त्री शोषण की समस्या को केंद्र में रखा गया है। यह विविध यंत्रणाओं और संघर्षों से जुड़ने वाली नारी की व्यथा कथा का जीवंत नाटक है। माधवी के कोमार्य व उसके गर्भ से चक्रवर्ती पुत्र का वरदान उसके लिए किसी अभिशाप से कम नहीं है क्योंकि इसी वरदान की खातिर वह मानसिक व शारीरिक शोषित होती रही और अंत तक सबकी इच्छा की पूर्ति करने का साधन मात्र बनती रही।

'माधवी' नाटक में तीन अंक हैं। पहले व तीसरे अंक में तीन दृश्य व दूसरे अंक में चार दृश्य हैं। सभी दृश्यों में बाहरी संरचना में तो बदलाव है परंतु भीतरी रूप में सभी अपने स्वार्थ सिद्धि में लगे हुए हैं। नाटक में कथावाचक द्वारा धर्मग्रन्थ में कर्तव्यपरायण को मनुष्य जीवन का प्रमुख ध्येय मानते हुए विश्वामित्र के बारह विद्याओं में निपूर्ण शिष्य गालव को गुरु दक्षिणा के लिए आठ सौ अश्वमेघी घोड़े व राजपाठ छोड़कर आश्रम में रहने लगे राजा ययाति के दानवीरता को प्रमुख कर्तव्य मानने वाले दो पुरुषों के यश की प्रतिपूर्ति के लिए स्त्री को माध्यम बनाया जाता है। राजा ययाति के आत्मसम्मान को गालव के बिना इच्छा पूर्ति के चले जाने का आहत सहन नहीं इसके लिए वह अपनी बेटी को दान कर देते हैं व गालव को अपने गुरु द्वारा मांगी

आठ सौ अश्वमेघ घोड़ों की असंभव सी गुरु दक्षिणा को चुकाने की हठ इन सभी के पौरुष दंभ की पूर्ति के लिए स्त्री को दांव पर लगाना क्या कर्तव्यपरायण का यही साधन है। माधवी को उसके पिता सुखी देखना चाहते हैं परंतु माधवी को जिस अनिश्चित सी भेंट को पूर्ण करने के लिए गालव के साथ भेज देते हैं उसमें माधवी की नहीं बल्कि अपनी जयजयकार की इच्छा का आत्मसंतोष अधिक है। गालव को भी माधवी के साथ रहकर सुख की उससे प्रेम की चाहत हैं परन्तु उससे कई अधिक उसे अपने गुरु को आठ सौ अश्वमेघ घोड़े देकर अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण कर अपने जीवन को सार्थक बनाना है। जिसके लिए उसे माधवी का एक के बाद एक राजाओं के साथ उनके रनिवास में रहना स्वीकार्य है।

भीष्म साहनी ने 'माधवी' नाटक द्वारा पुरुष के हाथों नारी के शोषण की मार्मिक अभियक्ति की है। सहदयता की सारी संवेदनाएं माधवी के साथ जुड़ जाती है और नारी शोषण के विरुद्ध तीव्र रोष पैदा करती है। पीड़ित वर्ग की व्यथा कथा कहता हुआ आडंबर, धर्माधता, थोथी राजनीति और प्रत्येक प्रकार के शोषण का पर्दाफाश करता है और एक संतुलित वैज्ञानिक सामाजिक दृष्टिकोण का सृजन करता संघर्ष को आगे बढ़ाता है,एक स्वस्थ दीक्षा बोध करता है।[i] चाहे वह प्रथम अंक के दृश्य में माधवी के पिता व गालव की स्थिति हो या दूसरे-तीसरे दृश्य में अयोध्या राजा हर्यश्व की चक्रवती पुत्र पाने की लालसा व दूसरे अंक में माधवी का अपने पहले पुत्र वसुमना को वचन अनुरूप राजा को सौंपकर गालव के साथ अश्वमेघों की तलाश में नए राजा के पास जाना। अयोध्या नरेश की ही तरह काशी नरेश दिवोदास को भी माधवी से चक्रवती सम्राट पुत्र की लालसा है। दिवोदास जिसे स्त्रियों में सिर्फ काम-क्रीड़ा का गुण ही आकर्षित करता है इसी कारण सत्रह रानियाँ उसके रनिवास में मौजूद हैं परंतु उन सभी से उसे पुत्री हुई हैं और जिस वीर पुत्र की लालसा उसे वर्षों से है उसकी पूर्ति माधवी द्वारा ही संभव है। कायर व स्वार्थपूर्ण राजा को माधवी से प्राप्त वीर पुत्र के बड़ा होकर शत्रुओं पर विजय पाने के लिए अपने शासन को बनाए रखने के लिए, सीमाओं पर छाए अपने शत्रुओं को रोकने के लिए, वह आदेश देता है कि "गुरु महाराज से कहें कि वे अनुष्ठान हमारे शत्रु को लक्ष्य करके करें। कहीं पर दुर्भिक्ष की व्यवस्था कर दें,कहीं पर महामारी की। इस बीच हमारा चक्रवती वीर बड़ा हो जाएगा।"[ii] यहाँ माधवी की इच्छा का कोई औचित्य नहीं दिखाई पड़ता वरन् वह इस तरह के लालची व अयोग्य राजा का चुनाव कभी नहीं करती परंतु उसे तो अपने पिता के आदेश व गालव के कर्तव्य को पूर्ण करने में अपनी आहुती देनी है इसलिए वह प्रतिरोध किए बिना काशी नरेश के साथ पुत्र प्राप्ति होने पर दो सौ अश्वमेघी घोड़े देने व अठारहवीं पुत्री होने पर करावास की सजा देने की शर्त के साथ रहने को मजबूर है। दूसरे अंक में अयोध्या में जश्न का माहौल है। राजा को सत्रह पुत्रियों के पश्चात पुत्र की प्राप्ति हुई है। माधवी ने प्रतर्दन नाम के दूसरे पुत्र को जन्म दिया परंतु अपने पहले पुत्र वसुमना को देखने के बाद कई दिनों के बाद तक उसे अपने पुत्र की याद आती रही इसलिए अपने बाद के दोनों पुत्रों की तरफ उसने देखा भी नहीं क्योंकि उसकी ममता उसके कर्तव्य के आगे बाधा न उत्पन्न करे इससे वह हमेशा बचती रही। माधवी को सबके कर्तव्यों सभी की इच्छापूर्ति के निर्वाह के लिए स्वयं के अस्तित्व को भूलाना पड़ा लेकिन उसके समर्पण के महत्व का एहसास किसी को नहीं रहता है। सिर्फ उसके रूपवती व

कौमार्य के वरदान के कारण सभी राजाओं के साथ ही गालव भी उससे अपनाना चाहता है लेकिन वास्तव में किसी के मन में उसके प्रति सच्चे प्रेम का एहसास उसकी तड़प मौजूद नहीं है। माँ बनने के बाद माधवी के भीतर का एहसास उसकी संवेदना को कोई नहीं समझ पाता यहाँ तक कि गालव को भी यह एहसास नहीं कि उसकी एक जिद् का असली भुगतान तो माधवी को अपनी भावनाओं को दफनाकर करना पड़ रहा है। स्त्री के प्रेम की गहराई उसके त्याग को भावनात्मक रूप में सँजोया गया है। माधवी गालव से प्रेम करने लगी है इसलिए वह जल्दी से गालव को इस प्रतिज्ञा से छुटकारा दिलवाना चाहती है। लेकिन जब सम्पूर्ण आर्यावत में ही अश्वमेघ घोड़े नहीं बचे तो वह छः सौ घोड़े लेकर विश्वामित्र के आश्रम में जाकर गालव को गुरु दक्षिणा से मुक्ति के लिए जाती है क्योंकि अब इस आश्रम के सिवा कहीं और घोड़े नहीं है। वह गालव की प्रतिज्ञा को अपनी प्रतिज्ञा मानकर विश्वामित्र के सामने अन्य राजाओं की भांति रहने का प्रस्ताव रखकर आश्रम में रहने की आज्ञा मांगती है जिससे विश्वामित्र का दंभ टूटता है और गालव गुरु दक्षिणा से मुक्त हो जाता है। विश्वामित्र को अपने शिष्य पर तो ययाति को अपनी पुत्री माधवी में अत्यंत गर्व होता है क्योंकि अभिमान व दानवीरता की जयजयकार का स्वार्थ पूर्ण होता है। गालव अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के बाद माधवी के साथ विवाह करना चाहता है परंतु माधवी की ढलती हुई देह व अनाकर्षक चेहरे को देख उसका मन परिवर्तित हो जाता है। जिस रूपवान स्त्री को वह अपनाना चाहता था माधवी अब उस रूप को वापस नहीं अपनाना चाहती। दरअसल गालव चाहता है कि माधवी अपने वरदान का उपयोग कर पहले की तरह आकर्षक छवि व चिर कोमार्य में बदल जाए वह इस रूप में उसे नहीं अपनाना चाहता। माधवी की आंतरिक पीड़ा की परवाह किए बिना गालव उसे कर्तव्य पालन की राय देता है तो माधवी का सवाल गहरी चुभन देता है – "संसार तुम्हें ही तपस्वी और साधक कहेगा, मेरे पिता को दानवीर कहेगा,और मुझे ? चंचल वृति की नारी, जिसका विश्वास नहीं किया जा सकता। यही ना...?"[iii] स्त्री की अस्मिता उसके कौमार्य के प्रति हमेशा से समाज का नजरिया संकुचित दिखाई पड़ता है। स्त्री के चरित्र पर अक्सर सवाल उठाने में पित् सतात्मक समाज अग्रणी रहा है। स्त्री की आंतरिक सुंदरता से कई अधिक उसकी बाहरी सुंदरता, आकर्षण छवि के प्रति नजरिया उसकी भावनाओं को झकझोर कर तोड़ने की प्रवृति चली आ रही है। इसलिए माधवी के सवालों का जवाब गालव को ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण सामाजिक संरचना को भी निरुत्तर करता है - "मैं वही माधवी हूँ, गालव। तुम किस माधवी के लिए छटपटाते रहते थे ? मैं तुम्हारें लिए केवल निमित्त मात्र थी। जब तुम मेरे सामने अनुनय-विनय कर रहे थे तब भी तुम झूठ बोल रहे थे। तुमने केवल एक ही व्यक्ति से प्रेम किया है और वह अपने आप से। पर मैं तुम्हें पहचानते हुए भी नहीं पहचान पाई। मैं सारा वक्त यही समझती रही कि गालव सच्ची साधना और निष्ठावाला व्यक्ति है। तुम भी गुरुजनों जैसे ही निकले,गालव....।"[iv] माधवी की बाहरी सुंदरता व उसके गर्भ से उत्पन्न चक्रवर्ती पुत्र के मोहवश ही गालव को तीनों राजाओं से पुत्र के बदले अश्वमेघ घोड़े की प्राप्ति होती है। अपने स्वार्थ पूर्ण होने के पश्चात उसे भी अन्य राजाओं की तरह ही माधवी से सौंदर्य, कोमार्यता व चक्रवर्ती पुत्र की लालसा है लेकिन माधवी अब अपने वरदान का उपयोग नहीं करना चाहती। सबके स्वार्थ की पूर्ति करते करते वह भीतर से

पूरी तरह टूट चुकी है। इसलिए अब उसे गालव का साथ भी स्वीकार्य नहीं क्योंकि वहाँ भी उसे मात्र स्वार्थपूर्ण लालसा ही दिखाई पड़ती है। अंक दो के दृश्य प्रथम में कथावाचना करते हुए एक प्रसंग में कहा जाता है कि "धर्मग्रंथों में स्त्री की तुलना पृथ्वी के साथ की गई है। जिस भांति पृथ्वी संसार-भर का बोझ वहन करती है, वैसे ही स्त्री सभी द्वायित्वों का भार वहन करती है उसकी शक्ति सेवा में है। पुरुष महत्वाकांक्षी होता है, पर स्त्री का प्रमुख गुण त्याग है,सेवा है।"[v] अर्थात सम्पूर्ण कष्टों को सहने का, पुरुष को प्रसन्न रखने आदि सभी पारिवारिक, सामाजिक, पारंपरिक कर्तव्यों को कुशलता से करने का द्वायित्व सिर्फ स्त्रियों का ही है। पुरुष ने केवल अर्थ की, अपने स्वार्थपूर्ण यश की भूमिका का निर्वाह करने में अधिक उत्साह दिखाया है। इस नाटक में भी पुरुष की स्वार्थपूर्ण सुख की प्राप्ति के लिए एक स्त्री को केवल साधन के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। माधवी को उसके पिता का आदेश कि गालव के साथ जाओ और गालव का आदेश कि अब इस राजा के साथ रहो, राजा को उसका चक्रवती पुत्र सौंपकर अब दूसरे राजा के पास रहो। माधवी को अपने दुधमुंहे बच्चों को छोड़ते हुए इधर से उधर चक्कर लगाते हुए कर्तव्य का निर्वाह करना जिसमें उसकी इच्छा, ममता, आत्मसम्मान का कोई मोल नहीं – "मैं क्या चाहूंगी? मेरे चाहने से क्या होता है, गालव ? मैं तो तुम्हारी गुरु दक्षिणा का निमित्त मात्र हूँ।"[vi] वाकई माधवी के कहे यह शब्द स्त्रियों के अधिकारों, उनकी भावनाओं के दमन की परतों के भीतर कैद हर स्त्री की आवाज है जिन्हें हमेशा से अनसुना किया जाता रहा है। माधवी के पास वापसी का कोई मार्ग नहीं उसके पिता ने राजा के कर्तव्य को अपने आत्मसंतोष को अपनी पुत्री की इच्छाओं से बढ़कर उसे दान में दे दिया है। अब उसके लिए भी अपने पिता के आदेश को स्वीकारना अपने कर्तव्य को निभाना ही ध्येय बन गया है। इसी संदर्भ में नाट्य आलोचक रणजीत राहा कहते हैं कि "माधवी स्पष्ट तौर पर भारतीय समाज में स्त्री की तथाकथित उपस्थिती और प्रायोजित नियति पर गहरा कटाक्ष करने वाली नाट्य कृति है। देशकाल में आए इन परिवर्तनों के बावजूद स्त्रियों के दमन,उत्पीड़न और शोषण में वृद्धि हुई है।" [vii]

भीष्म साहनी के समग्र साहित्य में मानवीय मूल्यों को महत्व दिया गया है। इन्हें प्रेमचंद की परंपरा का रचनाकार माना जाता है। माधवी नाटक में सम्पूर्ण कथानक में स्त्री की नियति को केंद्र में रखा है। नाटक का कथानक महाभारत के उद्योग पर्व से लेकर उसे वर्तमान सामाजिक स्थिति के साथ जिस तरह से शामिल किया है, वह समाज में वर्षों से चली आ रही सामाजिक संरचना के द्वंद को देखने में नाटककार की सूक्ष्मता का बोध कराता है। पौराणिक कथानक को लेने के बावजूद नाटक की भाषा व शिल्प को अधिक संस्कृतनिष्ठ व जटिलता के साथ नहीं बल्कि सरल,सहज,प्रवाहमय भाषा रूप में प्रस्तुत किया गया है। जिससे आत्मसात होने में सरलता होती है। साथ ही पात्रानुकूल व दृश्याकंन भाषा पर भी विशेष ध्यान दिया गया है। पुरुष पात्रों की मानसिक उलझनों में दंभपूर्ण स्वार्थ को व्यंग्यात्मक शैली व नाटक में एकमात्र स्त्री पात्र माधवी की उलझनों को भावनात्मक शैली के साथ प्रस्तुत किया गया है। नाटक में समाज में चली आ रही कुरीतियों, पूर्वाग्रहों के प्रति विरोधाभास की झलक दिखाई पड़ती है। भीष्म साहनी रंगमंच के विविध पहलुओं से जुड़े रहे। न केवल मौलिक नाटकीय रचना से बल्कि अभिनय व निर्देशन

में भी महत्वपूर्ण काम किया। मंच के अनुकूल दृश्यांकन व सरल सहज संवादों के साथ संप्रेषणीयता उनके नाटकों की पहचान है। नाटक में पौराणिकता के साथ ही आधुनिक संदर्भ में भी स्त्री पुरुष के बीच प्रेम की वास्तविकता को दर्शाया गया है। सदियों से समाज में परंपरागत रूप से चली आ रही पित्तसत्तात्मक व्यवस्था में स्त्री के अस्तित्व की अवेहलना, उस पर शोषण करने के अधिकार, स्त्री को निमित्त मात्र मानने की मानसिकता का चरितार्थ व्यंग्यात्मक रूप में किया गया है। पात्रों का चरित्र चित्रण व कथानक का वर्णन करते हुए पौराणिक परिवेश की उपस्थिती का आभास अद्भुत बन पड़ता है। इस नाटक में भीष्म साहनी की कहानी कहने की कला नाटक की नाटकीयता से ओझल नहीं होती प्रत्युत अधिक उभरकर सामने आती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

[i] सागर, तरसेम. (प्रथम सं.1990). भीष्म साहनी की नाट्य कला.जालंधर.दीपक पब्लिशर. पृ. सं. 16
[ii] साहनी,भीष्म.(2018)माधवी.नई दिल्ली:राजकमल प्रकाशन.पेपरबैक. पृ.सं. 77
[iii] वही, पृ.सं. 116
[iv] वही, पृ.सं. 117
[v] वही, पृ.सं. 47
[vi] वही, पृ.सं. 27
[vii] राय,हरियश.संपादक. (प्रथम सं.2020). भीष्म साहनी सादगी का सौंदर्यशास्त्र. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन. पृ. सं. 254